समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

• १५ जुलाई २०१२ • वर्ष : १६ • अंक : ०१ (निरंतर अंक : १८१)

मासिक समाचार पत्र

भगवान श्रीकृष्ण व पूज्य बापूजी का गौप्रेम

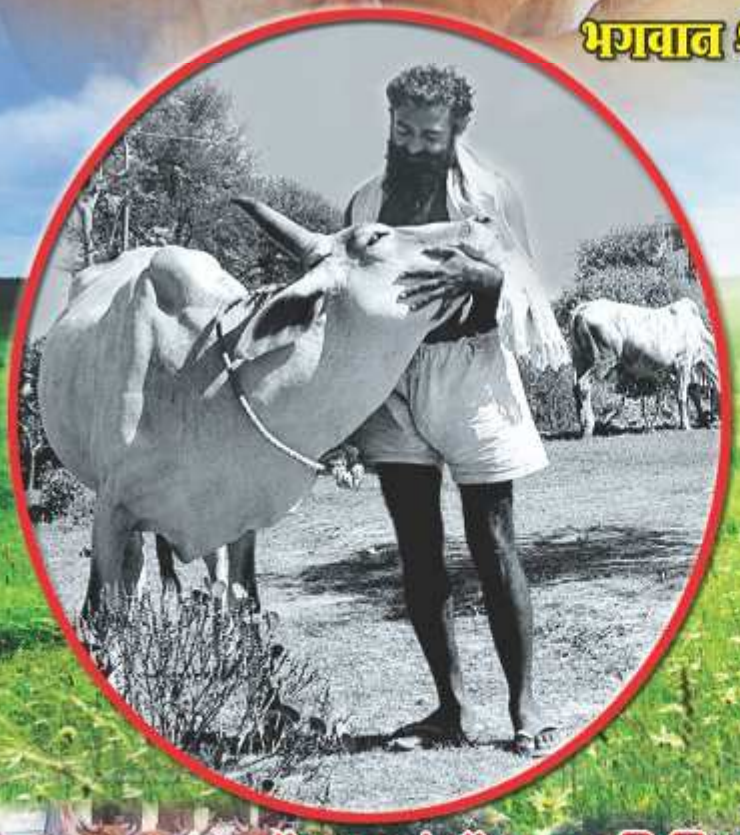

गावः पवित्रं परमं गावो मांगल्यमुत्तमम् ।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः ।।
'गायें परम पवित्र, परम मंगलमयी, स्वर्ग का सोपान, सनातन एवं धन्यस्वरूपा हैं।'
(अग्नि पुराण : २९२.१८)

गौरक्षा एवं गौपालन की मिसाल : संत श्री आशारामजी गौशालाएँ

पूज्य बापूजी के बाल, छात्र व कन्या मंडलों के विद्यार्थियों ने गौ-रक्षार्थ रैली निकाली, जिससे छत्तीसगढ़ प्रशासन ने कृषक पशुओं के रक्षण के लिए अधिनियम प्रस्तावित किया।

संकल्पपूर्ति का अनोखा साधन

मोक्ष कुटीर

बड़ बादशाह

व्यासपीठ

सामान्यतः कोई भी उपासक उपासना की शरण किसी-न-किसी उद्देश्य से ही लेता है, फिर वह चाहे घर-गृहस्थी, नौकरी-धंधे की कामना हो, सत्कर्म, दान-पुण्य का शुभ संकल्प हो अथवा मनुष्य-जन्म के परम लक्ष्य ईश्वरप्राप्ति का महासंकल्प ही क्यों न हो। जब किसी देव-प्रतिमा अथवा भगवत्प्राप्त संत-महापुरुष के स्थल पर किसी कामना या संकल्पपूर्ति हेतु प्रदक्षिणा की जाती है तो यह प्रक्रिया दिखने में अति सामान्य लगती है परंतु इसके पीछे अत्यंत सूक्ष्म रहस्य छिपे होते हैं। इसमें मानवी मन की श्रद्धा-समर्पण की भावना का सदुपयोग करते हुए उसे अत्यंत प्रभावशाली 'आभा-विज्ञान' का लाभ दिलाया जाता है।

प्रदक्षिणा में छिपे वैज्ञानिक रहस्य

देवमूर्ति व महापुरुषों के चारों तरफ दिव्य आभामंडल होता है। वैसे तो हर व्यक्ति के शरीर से एक आभा (ओरा) निकलती है किंतु ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष का आभामंडल दूर-दूर तक फैला होता है। यदि वे महापुरुष कुंडलिनी योग के अनुभवनिष्ठ योगी भी हों तो उनका आभामंडल तो इतना व्यापक होता है कि उसे नापने में यंत्र भी असमर्थ हो जाते हैं। ऐसे आत्मारामी संत जहाँ साधना करते हैं, निवास करते हैं, वह स्थल उनकी दिव्य आभा से, उनके शरीर से निकलनेवाली दिव्य सूक्ष्म तरंगों से सुस्पंदित, ऊर्जासम्पन्न हो जाता है। इस कारण ऐसे महापुरुष की परिक्रमा करने से तो लाभ होता ही है, साथ ही उनके सान्निध्य से सुस्पंदित स्थान की भी परिक्रमा से हमारे अंदर आश्चर्यजनक उन्नतिकारक परिवर्तन होने लगते हैं। महापुरुष की जीवन-परिवर्तक परम सात्त्विक आभा-तरंगों, दिव्य परमाणुओं से हमारा तन-मन, मति एवं हमारी आभा पुष्ट होती है। प्रदक्षिणा करनेवाला श्रद्धालु भक्त सामान्य व्यक्ति से अपने को ज्यादा आनंदित, शांत, उत्साहयुक्त, ऊर्जासम्पन्न महसूस करता है और इसीमें कामनापूर्ति एवं सफलता का विज्ञान छुपा है। प्रार्थना-परिक्रमा से मनोकामना एवं सफलताप्राप्ति की जो बात शास्त्रों में वर्णित एवं भक्तों द्वारा अनुभव की जाती है, वह कपोलकल्पित नहीं है। उसके मूल में अति सूक्ष्म एवं विशुद्ध वैज्ञानिकता है।

→

संकल्पपूर्ति का अनोखा साधन

प्रदक्षिणा = प्र + दक्षिणा अर्थात् दक्षिण (दायीं दिशा) की ओर फेरे करना। परिक्रमा सदैव दायें हाथ की ओर से ही की जाती है क्योंकि दैवी शक्ति के आभामंडल की गति दक्षिणावर्ती होती है। इसके विपरीत बायें हाथ की ओर से परिक्रमा करने से उक्त आभामंडल की तरंगों और हमारी स्वयं की आभा-तरंगों में टकराव पैदा होता है, जिससे हमारी जीवनशक्ति नष्ट होने लगती है।

प्रदक्षिणा ७ – लाभ अनगिनत !

तीर्थों की अपनी महिमा है परंतु हयात ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की महिमा तो निराली ही है। शास्त्र कहते हैं वे तो चलते-फिरते तीर्थराज हैं, तीर्थशिरोमणि हैं। ऐसे महापुरुष की यदि किसी वस्तु पर दृष्टि पड़ जाय, स्पर्श हो जाय अथवा वे संकल्प कर दें तो वह हमारे लिए 'प्रसाद' हो जाती है, प्रसन्नता, आनंद-उल्लास एवं शांति देनेवाली हो जाती है। किसीकी लौकिक कामना हो तो उसकी वह कामना भी पूरी हो जाती है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है विश्वभर में स्थित संत श्री आशारामजी आश्रमों में आत्मनिष्ठ महापुरुष पूज्य बापूजी द्वारा शक्तिपात किये हुए वटवृक्ष या पीपल वृक्ष, जिन्हें 'बड़ बादशाह' अथवा 'पीपल बादशाह' के नाम से जाना जाता है। आज ये कलियुग के साक्षात् कल्पवृक्ष साबित हो रहे हैं। इनकी श्रद्धापूर्वक मात्र ७ प्रदक्षिणा करने से लाखों-लाखों लोगों ने कैसे-कैसे फायदे उठाये हैं इसकी गणना सम्भव नहीं है। कितनों के रोग मिट गये, कितनों के दुःख-संताप दूर हुए, कितनों की मनोकामनाएँ पूर्ण हुई हैं। कितनों की आध्यात्मिक उन्नति हुई है, कितनों का संसार की दलदल में फँसनेवाला मन आध्यात्मिकता की ऊँचाइयों पर चढ़ने लगा है। प्रदक्षिणा करते समय जब श्रद्धालु अपना दायाँ अंग...
(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु अंक : १८१, जुलाई २०१२)

सनातन धर्म ही राष्ट्रीयता है

परमेश्वर ने इस विश्व में धर्म-संस्थापन करने के लिए ही भारतवर्ष की योजना की है। हमारा धर्म चिरकालिक धर्म है। वह विश्व के सब देशों के लिए सब कालों में उपकारक है। दुनिया का यही एक धर्म है जो अपने उपासकों को भगवान के निकट ले जाता है और उनसे प्रत्यक्ष भेंट कराता है। सत्य का वास्तविक आग्रह यही धर्म करता है। सत्य का वास्तविक मार्ग यही धर्म दिखाता है। सनातन धर्म कहता है, 'जड़-चेतन सर्वत्र जो कुछ भी है सब भगवान ही हैं।' ऐसी महान सूझबूझ केवल धर्म ही प्रस्थापित करता है। धर्म हमें मृत्यु के उस पार ले जाता है और अमरता से साक्षात् कराता है। दुनिया में इस ढंग का यही एक धर्म है... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु अंक : १८१, जुलाई २०१२)**

आत्ममंदिर के बाद स्वर्णमंदिर में

एक सेठ बड़ा अभिमानी था। वह साधु-संतों की हमेशा अवहेलना करता रहता था। सम्पत्ति के मद में वह इतना चूर था कि उसे पैसों के बल पर भगवान को प्रकट करने का भूत सवार हो गया। उसने यश पाने तथा अपनी विशेषता समाज में दिखाने के लिए सोने का मंदिर बनवाना प्रारम्भ कर दिया।

मंदिर की भूमि के पास ही एक महात्माजी की कुटिया थी। सेठ उन महात्मा का सदा तिरस्कार करता था। दयालु महात्मा ने सेठ को भगवान का निवास वास्तव में कहाँ होता है तथा कौन-सी चीज

भगवान को आकर्षित करती है, यह समझाने हेतु एक लीला रची। वे सेठ के मंदिर की तरह अपने... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक – १८१ जुलाई २०१२)**

गुरु बिन होय न ज्ञान

भगवान का एक प्रिय भक्त था धन्ना, जिसका पूरा समय भगवद्भजन में ही बीतता था। उसके प्रेम के वशीभूत होकर भक्तवत्सल भगवान स्वयं आकर उसकी गायें चराते व अपने भक्त के हाथों की प्रेमभरी रोटी खाकर अति प्रसन्न होते।

एक दिन धन्ना ने भगवान के साथ अठखेलियाँ करते हुए कहा : ''प्रभु ! मेरे मन में आपको आलिंगन करने की बड़ी प्रेममयी अभिलाषा उभर रही है।'' भगवान मंद-मंद मुस्कराये। धन्ना ने फिर कहा : ''भगवन् ! आपकी चंचल चितवन पर मुग्ध होकर मैं आपको आलिंगन करने की इच्छा से... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८१, जुलाई २०१२)**

गाय पोषक भी, रक्षक भी

सन् २००४ की घटना है। उज्जैन से करीब ९ कि.मी. दूर पिपलौदा द्वारिकाधीश नामक एक छोटा-सा गाँव है। वहाँ एक व्यक्ति के यहाँ एक सफेद गाय थी, जिसकी वह खूब प्रेम से सेवा करता था। घर में बड़ी खुशहाली थी। उन दिनों उस व्यक्ति और उसके संबंधी का खेत की जमीन को लेकर विवाद चल रहा था। एक दिन खेत पर उस व्यक्ति व संबंधी के बीच कहा-सुनी हो गयी। संबंधी जान से मारने की धमकी देकर गाँव की ओर चला गया।

सूर्यास्त का समय था। उस व्यक्ति के ८-१० वर्ष के तीन बच्चे खेल रहे थे। इतने में उसका संबंधी अपने पत्नी-पुत्र के साथ तलवार व लट्ठ लेकर उसे मारने के लिए आ धमका। उसने आते ही उस व्यक्ति के कंधे पर तलवार से वार किया, खून बहने लगा और वह व्यक्ति घायल होकर गिर पड़ा। बच्चे यह सब देखकर सहम गये और रोने लगे। उसकी बच्ची भगवान से करुण प्रार्थना करने लगी : ''हे भगवान ! क्या हमारी रक्षा करनेवाला कोई नहीं है ?''

वे तीनों मिलकर अगला वार करने ही वाले थे कि इतने में खूँटे से बँधी गाय... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८१, जुलाई २०१२)**

बुद्धि और स्फूर्ति बढ़ानेवाले सरल प्रयोग

मस्तिष्क की क्रियाशीलता का भोजन से सीधा संबंध होता है। हम जो कुछ खाते हैं, उससे हमारी मनःस्थिति, चुस्ती, स्मरणशक्ति पर विशेष प्रभाव पड़ता है। निम्नलिखित प्रयोग बुद्धिशक्ति को बढ़ाने में बहुत लाभदायी हैं।

*** तुलसी की चाय :** तुलसी के ५ पत्ते मसलकर एक कटोरी पानी में इतनी देर तक उबालें कि पानी का रंग पीला हो जाय। इसमें एक-दो काली मिर्च, सौंफ, अदरक व थोड़ी-सी मिश्री आदि का मिश्रण पीसकर डाल के थोड़ी देर उबालें। तुलसी की चाय तैयार ! यह दिमाग की थकान को दूर कर दिमाग को तेज करती है। इससे नसों का तनाव दूर होकर स्फूर्ति आ जाती है।

सावधानी : इसमें दूध नहीं डालें।

टिप्पणी : यदि दूध मिलाना हो तो आश्रमनिर्मित 'ओजस्वी चाय' का प्रयोग करें। १४ बहुमूल्य औषधियों के संयोग से बनी 'ओजस्वी चाय' भूखवर्धक व मेधा तथा हृदय के लिए बलदायक है। यह मनोबल बढ़ाती है। मस्तिष्क को तनावमुक्त करती है, जिससे नींद अच्छी आती है। यह यकृत के कार्य को सुधारकर रक्त की शुद्धि करती है।

('ओजस्वी चाय' सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों व श्री योग वेदांत सेवा समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध है।) **(शेष प्रयोग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८१, जुलाई २०१२)**

आश्रम द्वारा संचालित समाजोत्थान के विविध सेवाकार्य

नेपालगंज (नेपाल) में हरिनाम संकीर्तन यात्रा तथा उमरकोट, जि. नवरंगपुर (ओड़िशा) में गर्म भोजन के डिब्बों का वितरण।

सुमेरपुर, जि. पाली (राज.) में बालभोज तथा नांगल, जि. रोपड़ (पंजाब) के विद्यार्थियों में नोटबुक-वितरण।

२०१३ नूतन वर्ष कैलेंडर सेवा अभियान

ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की देह परमात्मा का साक्षात् स्वरूप होती है। संत कबीरजी कहते हैं :

अलख पुरुष की आरसी साधु का ही देह। लखा जो चाहे अलख को इन्हीं में तू लख लेह॥

दुःख, चिंता, तनावों से भरपूर आज की जीवन-प्रणाली में जब पूज्य बापूजी जैसे महापुरुष की छवि दिख जाती है तब हृदय आश्वासन, सांत्वना और पुरुषार्थ की सत्प्रेरणा से भर जाता है। आंतरिक सुषुप्त बल जागृत हो जाता है। पूज्य बापूजी की सत्प्रेरणाप्रद छवियों एवं बलप्रद उपदेशों को जनसमाज तक पहुँचाने हेतु प्रतिवर्ष **'नूतन वर्ष कैलेंडर सेवा अभियान'** चलाया जाता है।

सभी साधक भाई-बहन अपने परिचितों में नये वर्ष के कम-से-कम २५-५० कैलेंडर अवश्य बाँटें तथा अपने साधक व्यापारी मित्रों से भी कम-से-कम २५० से १००० तक कैलेंडरों का सौजन्य अवश्य करवायें। सौजन्य करानेवाले का नाम, फर्म का पता, विज्ञापन आदि कैलेंडरों पर छापा जायेगा।

कैलेंडरों के ऑर्डर के लिए संत श्री आशारामजी आश्रमों, श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवाकेन्द्रों पर रसीद बुकें उपलब्ध हैं।

दंत सुरक्षा टूथपेस्ट

दाँतों को रखे साफ, श्वासों में दे ताजगी व मसूड़े बनाये मजबूत

दाँतों के लिए उपयोगी विशिष्ट औषधियों से बना यह 'अच्युताय दंत सुरक्षा टूथपेस्ट' आपके दाँतों को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है। यह दाँतों को साफ करता है एवं मसूड़ों को मजबूत रखता है। इसके नियमित उपयोग से मसूड़ों की सूजन, मसूड़ों से खून निकलना, दाँतों का दर्द, दाँतों का हिलना, दाँतों की सड़न आदि दंतरोगों से रक्षा होती है।

आश्रम द्वारा संचालित विद्यार्थी-उत्थान के सेवाकार्य

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012-14
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.

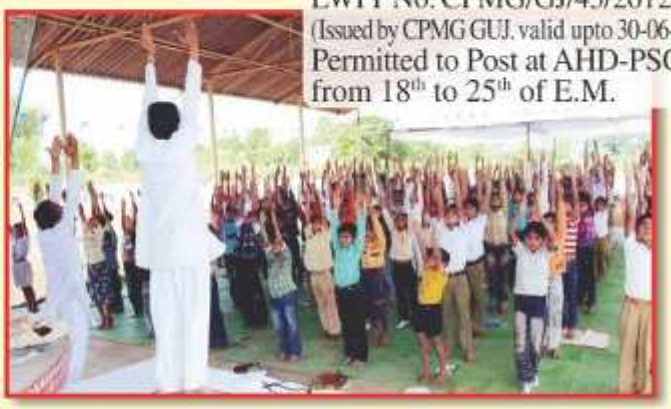

आश्रम-संचालित गुरुकुलों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का हरिद्वार आश्रम में पूज्य बापूजी के सान्निध्य में विशेष अनुष्ठान शिविर तथा मलाजखंड (म.प्र.) में विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर।

सीतामढ़ी (बिहार), मुंबई तथा मोडासा (गुज.) के विद्यार्थियों में सत्साहित्य-वितरण।

तन-मन को पावन करती हरिनाम संकीर्तन यात्राएँ

बालेश्वर (ओड़िशा)

लुधियाना (पंजाब)

फिरोजपुर (पंजाब)

इटारसी (म.प्र.)